

सामाजिक विज्ञान

# हमारा पर्यावरण

कक्षा 7 के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक



0763



एन सी ई आर टी  
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

**प्रथम संस्करण**

अप्रैल 2007 वैशाख 1929

**पुनर्मुद्रण**

नवंबर 2007, जनवरी 2009, जनवरी 2010,  
जनवरी 2011, जनवरी 2012, मार्च 2013,  
नवंबर 2013, नवंबर 2014, दिसंबर 2015,  
जनवरी 2017, दिसंबर 2017, जनवरी 2019,  
सितंबर 2019, जुलाई 2021, नवंबर 2021  
और फरवरी 2022

**संशोधित संस्करण**

नवंबर 2022 कार्तिक 1944

**PD 65T RPS**

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
2007, 2022

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर  
पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान  
और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी  
दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा इसके प्रैस प्राइवेट  
लिमिटेड 220, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली  
110 092 द्वारा मुद्रित।

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक को बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस  
श्री अरविंद मार्ग  
नयी दिल्ली 110 016

Phone : 011-26562708

108, 100 फीट रोड  
हेली एक्सटेंशन, होस्टेल्केरे  
बनाशंकरा III स्टेज  
बैंगलुरु 560 085

Phone : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन  
डाकघर नवजीवन  
अहमदाबाद 380 014

Phone : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस  
निकट: धनकल बस स्टॉप  
पनिहटी  
कोलकाता 700 114

Phone : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स  
मालीगाव  
गुवाहाटी 781021

Phone : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: अनूप कुमार राजपूत
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: विपिन दिवान
मुख्य संपादक (प्रभारी)	: बिज्ञान सुतार
सहायक संपादक	: शशि चड्ढा
उत्पादन सहायक	: राजेश पिप्पल

**आवरण एवं सज्जा**

ब्लू फिश

चित्र

मेहा गुप्ता, ब्लू फिश

कार्टोग्राफी

कार्टोग्राफिक डिजाइन एजेंसी

# आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएंगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज्ञा दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद्, सामाजिक विज्ञान

पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार विभा पार्थसारथी की विशेष आभारी हैं। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली  
20 नवंबर 2006

निदेशक  
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान  
और प्रशिक्षण परिषद्



# पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड-19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है —

- एक ही कक्षा में अलग-अलग विषयों के अंतर्गत समान पाठ्य सामग्री का होना;
- एक कक्षा के किसी विषय में उससे निचली कक्षा या ऊपर की कक्षा में समान पाठ्य सामग्री का होना;
- कठिनाई स्तर;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

© NCERT  
not to be republished

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

**अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति**

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

**मुख्य सलाहकार**

विभा पार्थसारथी, प्रिंसिपल (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

**सदस्य**

अनिंदिता सरकार, लेक्चरर, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

अंशु, रीडर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

एकता सिंधु, पी.जी.टी., इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक

मेहर सिंह, पी.जी.टी., सेंट मेरी स्कूल, द्वारका

रेखा लोहान, पी.जी.टी., मोतीलाल नेहरू स्कूल ऑफ स्पोर्ट्स, राई

श्यामला श्रीवत्स, टी.जी.टी., सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

समिता दास गुप्ता, पी.जी.टी., आनंदालय, आनंद, गुजरात

**हिंदी अनुवाद**

स्पेक्ट्रम कम्यूनिकेशंस, नयी दिल्ली

**सदस्य-समन्वयक**

तनु मलिक, लेक्चरर, सा.वि.मा.शि.वि., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

# आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्, इस पुस्तक के विकास में सहयोग देने हेतु दौलत पटेल, अध्यापिका (अवकाशप्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली; स्वागता बासु, लेक्चरर, एस.एस.वी. (पी.जी.) कॉलेज, हापुड़ एवं शिप्रा नॉयर, दार्जिलिंग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, वीर सिंह आर्य, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी (अवकाशप्राप्त), वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; एन.पी.सिंह, रीडर, एस.एस.वी. (पी.जी.) कॉलेज, हापुड़; दिनेश प्रताप सिंह, रीडर एवं विभागाध्यक्ष, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून; नरेन्द्र डबास, लेक्चरर, एस.सी.ई. आर.टी., हरियाणा; अवधेश कुमार, पी.जी.टी., केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. कैम्पस, नयी दिल्ली; दीपक दहिया, पी.जी.टी., राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, न. 2, नयी दिल्ली एवं शंकर शरण, लेक्चरर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का भी आभार व्यक्त करती है जिन्होंने अनुवाद के पुनरीक्षण हेतु अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

परिषद्, सविता सिन्हा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने प्रत्येक स्तर पर इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग दिया।

परिषद्, प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में निम्नोक्त सभी वैयक्तिक एवं संगठनों का आभार व्यक्त करती है जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को सहज बनाने हेतु विभिन्न चित्र एवं अन्य पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाई:

अंशु, रीडर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली को चित्र 3.8, 6.4, 6.5, 6.6, 6.11, 6.12 और 7.3 एवं पृष्ठ 14, 18 के चित्रों के लिए; आस्ट्रिया से कृष्ण श्योराण को चित्र 6.1 के लिए; गीतांजलि तहलान एवं परीक्षित तहलान, रोहतक को चित्र 5.3 एवं पृष्ठ 15 एवं 45 के चित्रों के लिए; आर. पेलेसन, सहारा मेट को चित्र 7.1 के लिए; पृष्ठ 1, 5 एवं 18 के चित्रों के लिए; आई.टी.डी.सी./पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.9, 6.7, 6.9, 6.10, 6.13, 6.14, 7.5, 7.6 एवं पृष्ठ 9 के चित्रों के लिए; डी.एम.डी/गृह मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.3 एवं पृष्ठ 25 एवं 35 के चित्रों के लिए; ब्लूफिश को चित्र पृष्ठ 9, 39, 45 के चित्रों के लिए; टाइम्स ऑफ इंडिया, नयी दिल्ली को पृष्ठ 21 एवं 33 पर दिए गए समाचारों के लिए; सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक, कक्षा-7, भाग-2, एन.सी.ई.आर.टी. 2005 को 6.3 के लिए तथा सेंटर ऑफ इनवायरनमेंटल एजुकेशन, अहमदाबाद को पृष्ठ 32 पर दिए गए क्रियाकलाप के लिए।



परिषद् पाठ्यपुस्तक के निर्माण में उल्लेखनीय सहयोग देने हेतु अनिल शर्मा एवं विजय कौशल, डीटीपी ऑपरेटर; नेहाल अहमद, अंजना बख्शी कॉपी एडिटर; उमेद सिंह गौड़ एवं शशि देवी प्रूफ रीडर तथा दिनेश कुमार, कंप्यूटर इंचार्ज का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है। इसी संदर्भ में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी प्रशंसनीय है।

निम्नलिखित बिंदु इस पाठ्यपुस्तक में इस्तेमाल किए गए भारत के मानचित्रों के लिए लागू हैं

1. © भारत सरकार का प्रतिलिप्याधिकार, 2006
2. आन्तरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।
3. समुद्र में भारत का जलप्रदेश, उपयुक्त आधार-रेखा से मापे गये बारह समुद्री मील की दूरी तक है।
4. चण्डीगढ़, पंजाब और हरियाणा के प्रशासी मुख्यालय चण्डीगढ़ में है।
5. इस मानचित्र में अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय के मध्य में दर्शायी गयी अंतर्राष्ट्रीय सीमायें, उत्तरी पूर्वी क्षेत्र (पुनर्गठन) अधिनियम 1971 के निर्वाचनानुसार दर्शित हैं, परंतु अभी सत्यापित होनी हैं।
6. भारत की बाह्य सीमायें तथा समुद्र तटीय रेखायें भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा सत्यापित अभिलेख/प्रधान प्रति से मेल खाती हैं।
7. इस मानचित्र में उत्तरांचल एवं उत्तरप्रदेश, झारखंड एवं बिहार और छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमायें संबंधित सरकारों द्वारा सत्यापित नहीं की गयी हैं।
8. इस मानचित्र में दर्शित नामों का अक्षरविन्यास विभिन्न सूत्रों द्वारा प्राप्त किया है।



# विषय-सूची

आमुख	iii
पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	v
<b>अध्याय 1</b>	
पर्यावरण	1-6
<b>अध्याय 2</b>	
हमारी पृथ्वी के अंदर	7-11
<b>अध्याय 3</b>	
हमारी बदलती पृथ्वी	12-19
<b>अध्याय 4</b>	
वायु	20-29
<b>अध्याय 5</b>	
जल	30-38
<b>अध्याय 6</b>	
मानव-पर्यावरण अन्योन्यक्रिया : उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्ण प्रदेश	39-48
<b>अध्याय 7</b>	
रेगिस्तान में जीवन	49-55
<b>परिशिष्ट</b>	56





एस. अमाल जेरी अर्थपुथराज, 10 वर्ष,  
सेंट पैट्रिक मॉडर्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुदुच्चेरी